SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शिक्षा में आने वाली समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

शारदा शर्मा, एम.एड. शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
गुंजन शर्मा, शिक्षा संकाय,
प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors

शारदा शर्मा, एम.एड. शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
गुंजन शर्मा, शिक्षा संकाय,
प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/07/2022
Revised on : -----
Accepted on : 27/07/2022
Plagiarism : 09% on 21/07/2022

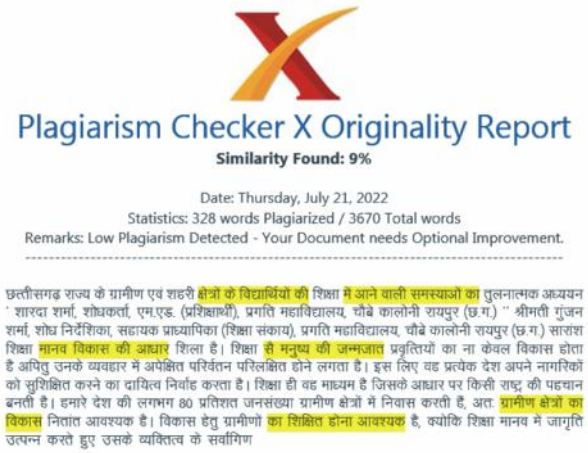

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 9%

Date: Thursday, July 21, 2022
Statistics: 328 words Plagiarized / 3670 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शिक्षा में आने वाली समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन
' शारदा शर्मा, शोधकर्ता, एम.एड. (प्रशिक्षार्थी), प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी रायपुर (छ.ग.) " श्रीमती गुंजन शर्मा, शोध निर्देशिका, सहायक प्राध्यापिका (शिक्षा संकाय), प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी रायपुर (छ.ग.) सारांश शिक्षा मानव विकास की आधार शिला है। शिक्षा से मनुष्य की जन्मजात प्रवृत्तियों का ना केवल विकास होता है अपितु उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन परिलक्षित होने लगता है। इस लिए वह प्रत्येक देश अपने नागरिकों को सुशिक्षित करने का दायित्व निर्वाह करता है। शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके आधार पर किसी राष्ट्र की पहचान बनती है। हमारे देश की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती हैं, अतः ग्रामीण क्षेत्रों का विकास नितांत आवश्यक है। विकास हेतु ग्रामीणों का शिक्षित होना आवश्यक है, क्योंकि शिक्षा मानव में जागृति उत्पन्न करते हुए उसके व्यक्तित्व के सर्वांगिण

शोध सार

शिक्षा मानव विकास की आधार शिला है। शिक्षा से मनुष्य की जन्मजात प्रवृत्तियों का ना केवल विकास होता है अपितु उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन परिलक्षित होने लगता है। इस लिए वह प्रत्येक देश अपने नागरिकों को सुशिक्षित करने का दायित्व निर्वाह करता है। शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके आधार पर किसी राष्ट्र की पहचान बनती है। हमारे देश की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती हैं, अतः ग्रामीण क्षेत्रों का विकास नितांत आवश्यक है। विकास हेतु ग्रामीणों का शिक्षित होना आवश्यक है, क्योकि शिक्षा मानव में जागृति उत्पन्न करते हुए उसके व्यक्तित्व के सर्वांगिण विकास के साथ–साथ समाज व राष्ट्र के नागरिक बनने में महती भूमिका का निर्वाह करती है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शिक्षा में आने वाली समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना था। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु बिलासपुर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के शासकीय विद्यालयों को लिया गया। अध्ययन में सर्वेक्षण कार्य हेतु 3 शहर तथा 3 ग्रामीण विद्यालयों को लिया गया। 60 शहरी एवं 60 ग्रामीण विद्यार्थियों का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने यादृच्छिक न्यादर्श का चयन किया। शोधकर्ता द्वारा अपनी समस्या के प्रतिदर्श के रूप में लिये गये विद्यालयों के विद्यार्थियों की संख्या 100–100 रखा गया है। कुल 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। परिणामों प्रदर्शित करते हैं की छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शिक्षा में आने वाली समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों के बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। छत्तीसगढ़ राज्य के शहरी क्षेत्रों के

बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

मुख्य शब्द

शिक्षा, छत्तीसगढ़, ग्रामीण.

भूमिका

भारत में जो शिक्षा पद्धति प्रचलित है उसके कई पक्षों में सुधार की आवश्यकता है। हमारी शिक्षा व्यवस्था पर एक वृहत् जनसमूह को शिक्षित करने का उत्तरदायित्व है। साधन और संसाधन बहुत सीमित हैं, परिस्थितियाँ भी अनुकूल नहीं फिर भी हम लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर प्रयत्नशील हैं। फिर भी हम दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ें तो इस निराशाजनक स्थिति से उभर सकते हैं। अगर कुछ चुनौतियों की बात करें तो ''सबके लिए शिक्षा'' की सुविधा उपलब्ध करवाना है तो प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति से यह अपेक्षा की जानी चाहिए कि वह इस लक्ष्य प्राप्ति में सहयोग प्रदान करें। 'म्बी वदम ज्मंबी वदम' का नारा इस दिशा में सफलता दिला सकता है। इसके लिए सरकारी तंत्रों के साथ स्वयंसेवी और सामाजिक संगठनों को भी जोड़ना होगा। विद्यालयों में संख्यात्मक नामांकन की बढ़ोतरी की बजाय न्यूनतम अधिगम स्तर पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

सारांश यही है कि हमारी शिक्षा केवल कामचलाऊ वस्तु न हो, वह केवल परीक्षा पास करने का माध्यम न हो, वरन् हमें भली प्रकार जीना सिखाये। विद्या वही है जो हमें इस दुनिया की चिन्ता से मुक्त करके हमारी जीवन नैया को भवसागर से पार लगाने में समर्थ हो– 'स विद्या या विमुक्तये।'

शिक्षा का इतिहास उतना ही पुराना है जितना की मानव सभ्यता का भारतीय शिक्षा के इतिहास कों निम्नलिखित कालों में विभक्त किया जा सकता है– वैदिक कालीन शिक्षा, बौद्व कालीन शिक्षा, मुस्लिम कालीन शिक्षा, ब्रिटिश कालीन शिक्षा एवं स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् की शिक्षा। प्रत्येक काल में शिक्षा की कुछ विशिष्टताएं रही है, वर्तमान शिक्षा का स्वरूप स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात से ही माना जाना चाहिये। प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में प्राथमिक शिक्षा – प्रथम प्राथमिकता की वस्तु है। यह पहली सीढ़ी है, जिसे सफलता पुर्वक पास करके ही कोई राष्ट्र अपने लक्ष्य तक पहुचता है। राष्ट्रीय जीवन के साथ जितना घनिष्ट संबंध प्राथमिक शिक्षा का है, उतना माध्यमिक या उच्च शिक्षा का नही है। इस प्रकार हम कह सकते है कि सब व्यक्तियों की शिक्षा अथवा जन साधारण की शिक्षा ही राष्ट्रीय प्रगति का मूलाधार है। शिक्षा के द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास किया जाता है। शिक्षा निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। आजादी के बाद भारतीय शिक्षा में सुधार व स्तरीकरण हेतू अनेक आयोगों तथा समितियों का केन्द्रीय स्तर पर गठन किया गया। अनेक आयोगों तथा समितियों ने शिक्षा की समस्याओं की समीक्षा की व राष्ट्रीय नीतियां तैयार की। आज का युग आधुनिक तथा अति प्रतिस्पर्धात्मक है, जहां प्रत्येक व्यक्ति के पास गुणों तथा योग्यताओं का असीमित भंडार है। आज प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में कोई विशेष गुण तथा प्रतिभा रखता है। तथा साथ ही यह सर्वविदित है कि विश्व में प्रत्येक व्यक्ति बौद्धिक व्यक्तित्व तथा मनोवैज्ञानिक गुणों में एक दूसरें से भिन्न होते हैं।

शिक्षा मनुष्य के जीवन पर्यन्त चलने वाली एक सामाजिक प्रक्रिया है। इसके द्वारा कोई समाज अपने सदस्यों को अपनी पूर्व संचित सभ्यता और संस्कृति से परिचित कराता है, और उन्हें इस योग्य बनाता है कि वे अपनी सभ्यता एवं संस्कृति में निरंतर विकास कर सकें शिक्षा मानव की अमूल्य वस्तु है। शैक्षिक लब्धि मनुष्य के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है, और शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले अनेक कारक है। परंतु शोधकर्ता के विचार मे सबसे प्रभाव कारक बच्चे की रूचि है जो वह किसी अधिगम में रखता है। रूचि सिखने–सिखाने की प्रक्रिया को संचालित करने वाली केंद्रिय शक्ति है। एवं रूचि को केवल सीखने मे ही सहायता प्रदान नही करती बल्कि अन्य व्यक्तित्व संबंधित विशेषताओं के निर्माण में सहायता करता है। यह छात्रा के निर्माण को दिशा निर्देशित करता है।

सामाजिक विकास परिवर्तन एवं आधुनिकीकरण में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस तथ्य को सरकार ने भी स्वीकार किया है कि शिक्षा प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार है और इस लिए निशुल्क एवं अनिवार्य बाल

शिक्षा का अधिकार अधिनियम सन 2009 में पारित किया व लागू हो गया है। इस अधिनियम के पारित होने के साथ निःशुल्क शिक्षा का दायित्व अब सरकार का है. शिक्षा को सर्वसाधारण तक पहुँचाने हेतु सरकार वचन बद्ध है और इस की अनिवार्यता को शैक्षणिक परिदृश्य को सुधारने हेतु भी सरकार की ओर से निरंतर प्रयास हो रहे हैं। इन प्रयासों की मूल भावना यह है समाज के सभी वर्ग के व्यक्ति अपने बच्चों को शिक्षित करवाएं. सर्व शिक्षा अभियान इसी ध्येय को सामने रख कर चलाया जा रहा है. इस अभियान के माध्यम से सुनिश्चित किया जा रहा है कि विशेष वर्ग के बच्चे जिन के माता–पिता, संरक्षक या अभिभावक शिक्षा पर होने वाले खर्च को वहन करने में असमर्थ हैं, उन्हें निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध करवाई जाए और इन अध्ययनरत् विद्यार्थियों को पौष्टिक व स्वादिष्ट व्यंजन दोपहर के भोजन में विद्यालय में ही परोसे जाएँ. इस के साथ ही अन्य कई सुविधाएँ दी गई हैं।

विशेषज्ञों और शिक्षाविदों को इस समस्या की गहराई तक चिन्तन करना है। इस में उन का विवेकी व दूरदर्शी होना अत्यंत ही आवश्यक है. वे केवल यह न सोचें कि इस वर्ग विशेष को सुविधाएं देने से समस्या सुलझ जायगी. सुविधाएं भी आवश्यक हैं परन्तु बच्चों को स्कूल भेजना उस से भी अधिक आवश्यक है। इस के लिए माता–पिता को शिक्षा के प्रति जागरूक करने की व शिक्षा से होने वाले लाभों से अवगत कराना भी अनिवार्य है। मनुष्य की यह स्वाभाविक प्रवृति होती है कि जिस में लाभ देखता है उसे अवश्य ग्रहण करता है।

शिक्षा की समस्या समाधान हेतु सुझाव

शिक्षा के व्यापक प्रसार हेतु सुझाव

1. **अनिवार्य शिक्षा की स्थिर नीतिः** सरकार को सर्वप्रथम अनिवार्य शिक्षा के प्रति एक निश्चित तथा स्थिर नीति का पालन करना चाहिए। अनिवार्य शिक्षा के प्रसार को प्रथम स्थान देना चाहिए। केंद्र सरकार इस ओर प्रयत्नशील है।

2. **शिक्षकों की समस्या का हलः** अध्यापकों के अभाव हल करने के लिए प्रारंभ में अप्रशिक्षित अध्यापकों को शिक्षण कार्य में के लिए रखा जा सकता है, बाद में राज्य की ओर से वर्ष भर की छुट्टी पर प्रशिक्षण विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा जा सकता है। अध्यापकों के वेतन मानों में भी सुधार किया जाए।

3. **शिक्षा प्रसार में सुधारः** प्राथमिक शिक्षा का भार स्थानीय संस्थाओं के ऊपर ना डालकर सरकार का कर्तव्य है कि वह स्वयं उठाए। राष्ट्र के नागरिकों को शिक्षित बनाने का उत्तरदायित्व एक लोक कल्याणकारी राज्य होता है, यदि किसी कारण सरकार ऐसा नहीं कर सकती तो एक शक्तिशाली केंद्रीय समिति का निर्माण किया जाए, जो स्थानीय समस्याओं पर शिक्षा संबंधी मामलों में नियंत्रण रख सके। आवश्यकता पड़ने पर सरकार की ओर से उदारतापूर्वक सहायता प्रदान की जाए।

4. **आर्थिक समस्या का हलः** प्राथमिक शिक्षा के मार्ग में आने वाली अन्य समस्याओं में आर्थिक समस्या जटिलतम है। सरकार जिस धन को परंपरागत प्राथमिक स्कूलों को बेसिक स्कूलों में बदलने के लिए व्यय कर रही है, उसी धन को नवीन प्राथमिक स्कूलों की स्थापना तथा अनिवार्य को प्रचलित करने में व्यय करें तथा धनी व्यक्तियों से शुल्क लिया जाए।

अध्ययन का महत्व

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा के द्वारा बालक एवं बालिकाओं का सर्वांगीण विकास किया जाता है। शिक्षा व्यक्ति को सामाजिक एवं राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ती है। साक्षरता तथा संस्कारों का आपस में अभिन्न संबंध है। अक्षर ज्ञान के साथ–साथ ही नैतिक शिक्षा व शिष्टाचार संबंधी बातों को समझने में सुविधा हो जाती है। दैनिक जीवन की आवश्यकताओं को सहजता से पूरा किया जा सकता है। सामाजिक विकास परिवर्तन एवं आधुनिकीकरण में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस तथ्य को सरकार ने भी स्वीकार किया है कि शिक्षा प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार है।

प्रस्तुत शोध समस्या का महत्व निम्नानुसार परिलक्षित होगाः

- सामाजिक समस्याओं को जानकर दूर करना होगा।
- प्रतिभाओं को सामने लाने के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित कर।
- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के बालक–बालिकाओं में मानसिक योग्यता को उपर उठाने के लिए।
- पारिवारिक वातावरण को समझने हेतु
- बालक एवं बालिकाओं शिक्षा से व्यवसायिक स्तर को उपर उठाने में।

पूर्व में किए गए शोध कार्य

पाल, संजय कुमार (2019) ने ''भारत में प्राथमिक शिक्षा से सम्बंधित मुददों एवं शिक्षा के आधार का अध्ययन'' किया। शिक्षा मानव के जीवन की आधार शिला है। मानव का विकास और उन्नति शिक्षा पर ही निर्भर है, शिक्षा व्यक्तित्व का निर्माण भी करती है। जन्म के समय बालक पशुत्व आचरण करता है उस समय वह अपनी मूल प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर कार्य करता है। शिक्षा उसकी इन प्रवृत्तियों को उचित मार्गदर्शन करके परिपक्वता प्रदान करती है। बालक एवं उसके व्यवहार को, उसके आचरण को, उसके क्रियाकलापों को उचित और समाजोपयोगी बनाती है। शिक्षा उसमें रचनात्मक शक्ति का विकास करती है। यदि शिक्षा का अर्थ अधिक समझें तो यही है कि शिक्षा ही वह गुरु तथा दीपक है जो कि मनुष्य को सही पथ दिखाती है तथा जिसकी दिशा तथा रोशनी को अपनाकर खुद को समाजपयोगी बनाकर समाज को विकास की ओर अग्रसर करता है तो यह गलत न होगा। भारत जैसा एक लोकतांत्रिक तथा बहुजनसंख्या वाले देश में शिक्षा का अधिकार अधिनियम (मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार 2009) माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षा तथा बच्चों तक शिक्षा पहुचाने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम के तौर पर समझा जा रहा है। इस अधिनियम को सर्वाधिक लाभ श्रमिकों के बच्चों को, बाल मजदूरों प्रवासी बच्चों विशेष आवश्यकता वाले बच्चों या फिर ऐसे बच्चों को – जो सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, भौगोलिक, भाषाई अथवा लिंग कारको की वजह से वंचित बच्चों में शामिल है। प्रस्तुत शोध में हम प्राथमिक शिक्षा में आने वाले मुद्दों एवं भारत में जो शिक्षा का आधार है उसका अध्धयन करेंगे।

कुशवाह, सीमा (2019) ने ''शैक्षणिक समस्याओं के समाधान में जन शिक्षकों की भूमिकारू एक अध्ययन''। जीवन की चुनौती से निबटने का एक मात्र तरीका है। उस सर्वोच्य शक्ति का हाथ थामना जो जीवन की सबसे कठिन घड़ियों में उबरने में आपकी मदद करें। इसका सबसे महत्वपूर्ण साधन है। गुरू और गोविन्द। किसी भी देश की उन्नति में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा केवल वर्तमान से वर्तमान की यात्रा नहीं है, बल्कि वह अतीत से भविष्य तक का ऐसा मार्ग है। जिसे वर्तमान के पुल पर से गुजरना होता है। सभ्यता के विकास के साथ–साथ शिक्षा ने विकास की प्रक्रिया में सर्वोच्य स्थान प्राप्त किया है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो जीवन पर्यन्त चलती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को गुरू और गोविन्द की आवश्यकता होती है, जो कि अपने आदर्शों एवं मूल्यों से विद्यार्थियों का सही मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है जन शिक्षकों की शैक्षणिक समस्याओं के समाधान में भूमिका ज्ञात करना।

आशा देवी (2019) ने ''पिछड़े वर्ग से संबंधित किशोरी छात्राओं की बौद्धिक एवं शैक्षिक समस्याओं का अन्वेषण'' विषय पर शोध कार्य कर यह ज्ञात किया। निष्कर्ष किया कि ये छात्राएं अपने स्वास्थ्य आर्थिक स्थिति अध्ययन सामग्री, दूसरों के साथ मिलले–जुलने भूलने की आदत तथा संवेगात्मक अस्थिरता से चितिंत रहती है।

समस्या कथन

''छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शिक्षा में आने वाली समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।''

प्रकार्यात्मक परिभाषा

शिक्षाः ''गांधीजी के अनुसार''– शिक्षा से तात्पर्य बालक, मनुष्य और मानव के शरीर, मन तथा आत्मा के

सर्वांगीण एक सर्वोकृष्ट विकास से है।

ग्रामीणः ग्रामीण का मतलब होता है कि जो लोग गांव में रहते है, उनका मुख्य व्यवसाय खेती–किसानी करना होता है।

शहरीः वह जो शहर में निवास करता हो या शहर में रहने वाला व्यक्ति।

अध्ययन का उद्देश्य

- छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शिक्षा में आने वाली समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों के बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं का अध्ययन।
- छत्तीसगढ़ राज्य के शहरी क्षेत्रों के बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना

- छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शिक्षा में आने वाली समस्याओं में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
- छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों के बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
- छत्तीसगढ़ राज्य के शहरी क्षेत्रों के बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

अध्ययन का परिसीमन

- प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु बिलासपुर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के शासकीय विद्यालयों को लिया गया।
- अध्ययन में सर्वेक्षण कार्य हेतु 3 शहर तथा 3 ग्रामीण विद्यालयों को लिया गया।
- 60 शहरी एवं 60 ग्रामीण विद्यार्थियों का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या से तात्पर्य बिलासपुर शहर के छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा संबद्ध शासकीय विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों से लिया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने यादृच्छिक न्यादर्श का चयन किया। शोधकर्ता द्वारा अपनी समस्या के प्रतिदर्श के रूप में लिये गये विद्यालयों के विद्यार्थियों की संख्या 100–100 रखा गया है। कुल 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

चर

अध्ययन के चरः

(क) **स्वतंत्र चरः** छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थी।

(ख) **आश्रित चरः** शिक्षा में आने वाली समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शिक्षा में आने वाली समस्याओं में ज्ञात करने के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया।

सांख्यिकीय विश्लेषण

सांख्यिकीय अभिप्रयोगः संबंधित लघु शोध प्रबंध के लिए निम्न सांख्यिकीय सूत्री का प्रयोग कर गणना की जायेगी।

मध्यमान (Mean) : $M = \frac{\Sigma X}{N}$

प्रमाप विचलन S.D. $= \sqrt{\frac{\sum d^2}{N}}$

क्रांतिक अनुपातः $CR = \frac{M_1 \sim M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}}$

परिकल्पना का प्रमापीकरण एवं परिणाम

परिकल्पना H_1

छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शिक्षा में आने वाली समस्याओं में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

सारणी क्रं. 01: छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शिक्षा में आने वाली समस्याओं के प्राप्तांकों का माध्य, प्रमाप विचलन तथा C.R. मूल्य दर्शाने वाली सारणी

चर	संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	C.R. मूल्य	तालिका मूल्य	सार्थक /सार्थक नहीं
ग्रामीण	60	55.4	25.31	0.52	1.95	0.05 स्तर पर सार्थक नहीं
शहरी	60	53.1	25.54			

व्याख्या

उपरोक्त सारणी दर्शाती है कि 60 ग्रामीण एवं 60 शहरी विद्यार्थियों की शिक्षा में आने वाली समस्याओं के प्राप्तांकों का माध्य 55.4 व 53.1 है तथा उनका प्रमाप विचलन 25.31 व 25.54 है। ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शिक्षा में आने वाली समस्याओं के प्राप्तांकों के माध्य में अंतर है शहरी विद्यार्थी की समस्या ग्रामीण विद्यार्थियों की शिक्षा में आने वाली समस्या से कम है। ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शिक्षा में आने वाली समस्याओं के प्राप्तांको के माध्य में अंतर की सार्थकता के लिए C.R. मूल्य की गणना की गई जो 0.52 प्राप्त हुआ। 118 df के लिए 0.05 स्तर पर t का टेबल मूल्य त्र 1.98 है। जो C.R. की की गणना मूल्य से ज्यादा है अतः छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शिक्षा में आने वाली समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया अतः परिकल्पना H_1 ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की समस्याओ में सार्थक अंतर पाया जाएगा अस्वीकृत होती है।

कारण

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शिक्षा में आने वाली समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जिसका कारण है कि ग्रामीण एवं शहरी परिवेश जो उन समस्याओं की उत्पत्ति हेतु अलग–अलग परिस्थितियां उत्पन्न करता है। जिसमें ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राएं समान रूप से प्रभावित होते हैं।

आरेख क्रमांक 01: छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शिक्षा में आने वाली समस्याओं के प्राप्तांकों का संख्या, माध्य एवं प्रमाप विचलन दर्शाने वाला आरेख

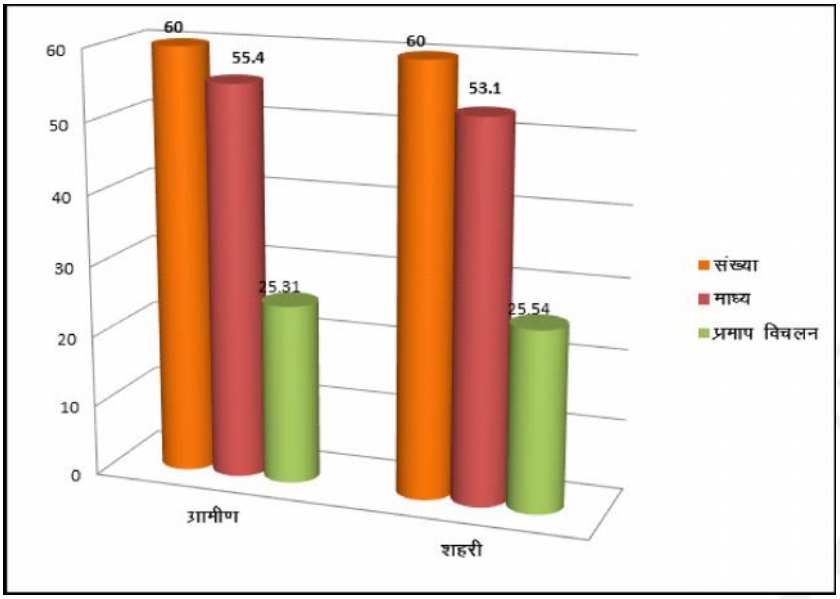

परिकल्पना H_2

छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों के बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

सारणी क्रं. 02: छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों के बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं के प्राप्तांको का माध्य, प्रमाप विचलन तथा C.R. मूल्य दर्शाने वाली सारणी

चर	संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	C.R. मूल्य	तालिका मूल्य	सार्थक /सार्थक नहीं
बालक	30	53.0	23.70	0.72	1.98	0.05 स्तर पर सार्थक नहीं
बालिकाएं	30	57.7	26.23			

व्याख्या

उपरोक्त सारणी दर्शाता है कि 30 ग्रामीण बालक तथा 30 ग्रामीण बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं के प्राप्तांको का माध्य 53 एवं 57.7 है तथा प्रमाप विचलन 23.70 व 26.23 है। ग्रामीण विद्यार्थियों की समस्याओं में बालक एवं बालिकाओं के माध्यों में अंतर है। ग्रामीण बालक एवं बालिकाओं की समस्याओं में ग्रामीण बालक की शिक्षा में आने वाली समस्या बालिकाओं की समस्याओं से कम है। ग्रामीण बालक एव बालिकाओं की समस्या के माध्य में अंतर की सार्थकता के लिए C.R. मूल्य की गणना की गई जो 0.72 प्राप्त हुआ। 58 df के लिए 0.05 स्तर पर t का टेबल मूल्य 1.98 है जो C.R. की गणना मूल्य से ज्यादा है अतः ग्रामीण क्षेत्रों के बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया अतः परिकल्पना H_2 छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों के बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं में सार्थक अंतर पाया जाएगा, अस्वीकृत होती है।

कारण

ग्रामीण क्षेत्र के बालक एवं बालिकाओं की समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जिसका कारण है कि समान परिवेश होने के कारण उनकी समस्याएं समान है।

आरेख क्रमांक 02: छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों के बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं के प्राप्तांकों का संख्या, माध्य एवं प्रमाप विचलन दर्शाने वाला आरेख

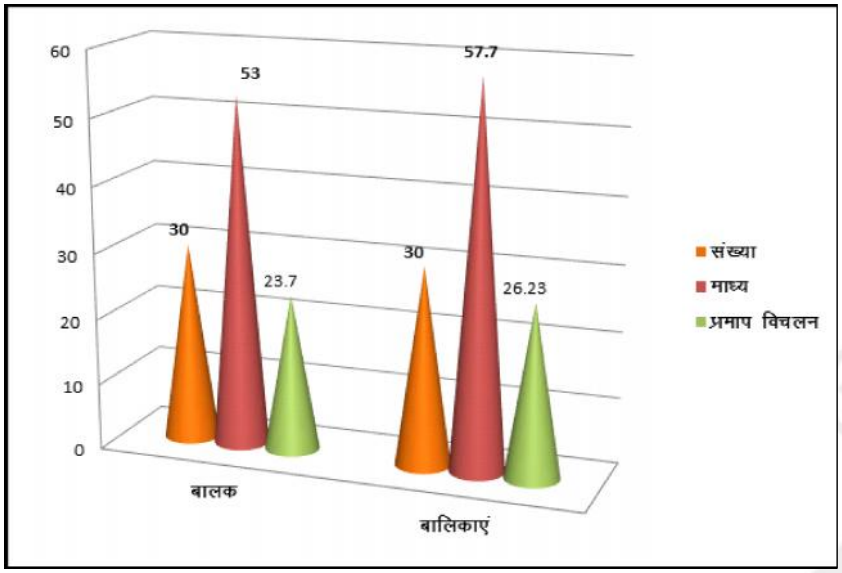

परिकल्पना H_3

छत्तीसगढ़ राज्य के शहरी क्षेत्रों के बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

सारणी क्रं. 03: छत्तीसगढ़ राज्य के शहरी क्षेत्रों के बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं के प्राप्तांको का माध्य, प्रमाप विचलन तथा C.R. मूल्य दर्शाने वाली सारणी

चर	संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	C.R. मूल्य	तालिका मूल्य	सार्थक /सार्थक नहीं
बालक	30	55	25.18	0.10	1.98	0.05 स्तर पर सार्थक नहीं
बालिकाएं	30	51	23.74			

व्याख्या

उपरोक्त सारणी दर्शाता है कि 30 शहरी बालक तथा 30 शहरी बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं के प्राप्तांको का माध्य 53 एवं 51 है तथा प्रमाप विचलन 25.18 व 23.74 है। शहरी विद्यार्थियों की समस्याओं में बालक एवं बालिकाओं के माध्यों में अंतर है। ग्रामीण बालक एवं बालिकाओं की समस्याओं में शहरी बालक की शिक्षा में आने वाली समस्या बालिकाओं की समस्याओं से कम है। शहरी बालक एव बालिकाओं की समस्या के माध्य में अंतर की सार्थकता के लिए C.R. मूल्य की गणना की गई जो 0.10 प्राप्त हुआ। 58 df के लिए 0.05 स्तर पर t का टेबल मूल्य 1.98 है जो C.R. की गणना मूल्य से ज्यादा है अतः शहरी क्षेत्रों के बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया अतः परिकल्पना H_2 छत्तीसगढ़ राज्य के शहरी क्षेत्रों के बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं में सार्थक अंतर पाया जाएगा, अस्वीकृत होती है।

कारण

शहरी बालकों एवं बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जिसका कारण है कि समान परिवेश होने के कारण उनकी समस्याएं समान है।

आरेख क्रमांक 03: छत्तीसगढ़ राज्य के शहरी क्षेत्रों के बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं के प्राप्तांकों का संख्या, माध्य एवं प्रमाप विचलन दर्शाने वाला आरेख

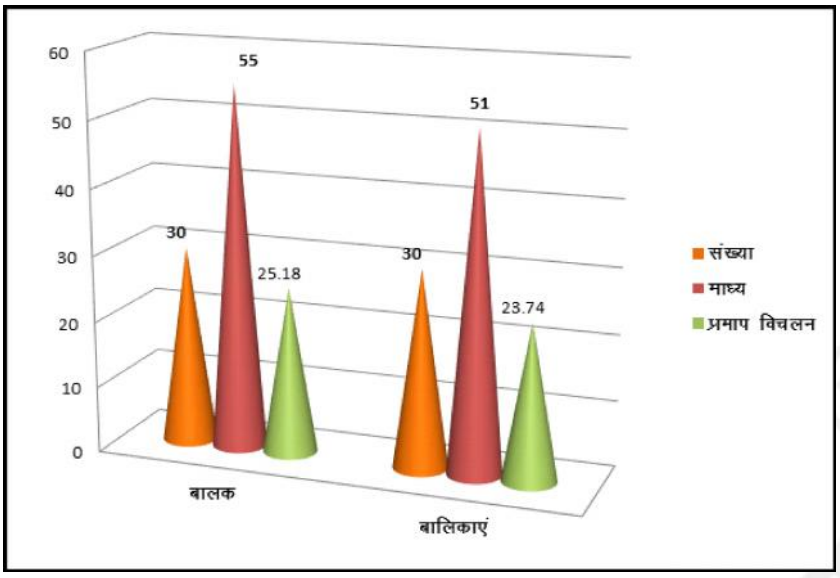

निष्कर्ष

- छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शिक्षा में आने वाली समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों के बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- छत्तीसगढ़ राज्य के शहरी क्षेत्रों के बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सुझाव

विद्यार्थियों के लिए

- मन के भावों को पालको से अभिव्यक्त करें।
- शारीरिक परिवर्तनों संबंधी शंकाओं हेतु पालकों की मदद लें।
- शैक्षणिक प्रदर्शन तथा शारीरिक बनावट के संबंध में मन में हीन भावना न आने दें।
- उचित शारीरिक तथा मानसिक विकास हेतु किसी एक क्रीड़ा को माध्यम बनाए।

पालको के लिए

- विद्यार्थियों को शिक्षा हेतु प्रेरित करें परंतु उच्च प्रदर्शन का दबाव न बनाएं।
- बालक/बालिका से मित्रवत व्यवहार रखें।
- विद्यार्थियों में होने वाले शारीरिक परिवर्तनों से संबंधित सभी संकाओं का समाधान करें।
- अपने बालक/बालिका के साथ पर्याप्त समय बिताएं।

शिक्षकों के लिए

- बालक तथा बालिका में भेद न करें।
- पढ़ाई में कमजोर छात्र पर भी संपूर्ण ध्यान दें।

- छात्रों को विषय के अतिरिक्त पाठ्योत्तर गतिविधियों हेतु प्रेरित करें।
- छात्रों को प्रश्न करने हेतु प्रेरित करें।
- शिक्षण को रूचिपूर्ण बनाने हेतु टी.एल.एम. का प्रयोग किया जाना चाहिये।
- विद्यालयों में स्वच्छता तथा पेयजल एवम् शौचालय की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए।
- शिक्षकों को सैद्धांतिक पक्ष के साथ–साथ व्यावहारिक पक्ष पर भी बराबर ध्यान देना चाहिए।
- शिक्षा विभाग द्वारा समय–समय पर आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण–कार्यक्रमों की जानकारी हेतु जनशिक्षकों से सम्पर्क कर उनमें सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए।

अनुकरणीय अध्ययन

- विद्यार्थियों की समस्याओं के समाधान में आधुनिक शिक्षण तकनीक की भूमिका का अध्ययन।
- विद्यार्थियों में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति तथा सामाजिक पतन का अध्ययन।
- शिक्षण संस्थानों में लैंगिक भेदभाव का अध्ययन।
- विद्यार्थियों में बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्ति का अध्ययन।
- विद्यार्थियों में यौन शिक्षा के प्रभावों का अध्ययन।
- परिवार के आकार तथा बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में संबंध का अध्ययन।

संदर्भ सूची

1. बधेका, गिजुभाईः *मॉण्टेशरी शिक्षा पद्धति,* संस्कृत साहित्य, दिल्ली, 2000।
2. मिश्र, अमरेशः *आधुनिक शिक्षा का स्वरूप,* मिश्रा बुक डिपो, इलाहाबाद, 2012।
3. वेदालंकार, सत्यकामः *शिक्षा सिद्धांत और समस्याएं,* राष्ट्रवाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2002।
4. शारदा, जितेन्द्रः *शिक्षा की समस्याएं,* श्रीगणेश प्रकाशन, दिल्ली, 2008।
5. पचौरी, महावीरः *भारत में आधुनिक शिक्षा,* रजत प्रकाशन, नई दिल्ली 2011।
6. प्रसाद, ,राजेन्द्रः *भारतीय शिक्षा,* प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011।
7. पाण्डेय, बृजेश कुमारः *उच्च शिक्षा का परिदृश्य,* भारती पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, फैजाबाद, 2013।
8. वैश्य,एल.पी.: *उच्च शिक्षाः दशा व दिशा,* विश्वभारती पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2005।
9. धनकर, सं. रोहित, भादू, राजारामः *शिक्षा के संदर्भ और विकल्प,* आधार प्रकाशन, पंचकूला, 2011।
10. पाण्डेय, रामशकलः *शिक्षाः वर्तमान संदर्भ में,* विकल्प प्रकाशन, इलाहाबाद, 2011।
11. कुमार, नरेश, *राष्ट्रीय शिक्षा,* विक्रम प्रकाशन, दिल्ली, 2001।
12. लिविंग्सटन, रिचर्ड, *शिक्षा की समस्याएं,* अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रा. लिनई दिल्ली 2012।
13. महतो, बाल्मीकिः *शिक्षा, समानता और समाज,* आधार प्रकाशन, पंचकूला, 2012।
14. पाठक, आर.पी.: *प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा,* कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2014।
15. औपचारिक शिक्षा एक प्रयोगः लोक शिक्षण संचालनालय (म0प्र0) कार्य योजना (1992) शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली पृष्ठ 68–69।
16. अवस्थी, राकेश (2006): स्कूल चलें हम अभियान 2005 का प्राथमिक स्तर पर प्रभाव का अध्ययन (टीकमगढ़

जिले के संदर्भ में)– एम.एड लघु शोध प्रबन्ध सर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर।

17. सर्वशिक्षा अभियानः प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लिए कार्यक्रम कार्यान्वयन के लिए कार्यतंत्र–मानव संसाधन विकास प्रारंम्भिक शिक्षा और साक्षरता विभाग।

18. सामर्थ्य – शिक्षक शिक्षण सामग्री, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल स्कूल शिक्षा विभाग मध्यप्रदेश शासन।

19. सिंह, आर. (2001), ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की शैक्षणिक कार्यदशाओं का समाज शास्त्रीय अध्ययन पी.एच.डी (समाजशास्त्र) डॉ.बीआर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय।

****